



**ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల, టెక్కలి**  
**Government Degree College, Tekkali**  
**శ్రీ కాకుళం జిల్లా, ఆంధ్ర ప్రదేశ్**

తెలుగు, హిందీ, ఒరియా, ఇంగ్లీష్ విభాగాలు  
Departments of Telugu, Hindi, Oriya, English



**సాహిత్యంలో మహిళ**  
**Women in Literature**  
**साहित्य में नारी**  
**ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନାରୀ**



Honorary Editor  
Prof. T. Govindamma

Editor  
Prof. Ayyagari Sitaratnam

© Prof. Ayyagari Sitaratnam & Prof. T.Govindamma 2023

**All rights reserved**

rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, but the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

First Published in April 2023

**ISBN: 978-93-5741-626-9**

**BLUEROSE PUBLISHERS**

[www.BlueRoseONE.com](http://www.BlueRoseONE.com)

[info@bluerosepublishers.com](mailto:info@bluerosepublishers.com)

+91 8882 898 898

**Distributed by:** BlueRose, Amazon, Flipkart

## EDITORIAL BOARD

*Honorary Editor*

**Dr. T. Govindamma**

Principal, GDC, Tekkali

*Editor*

**Dr. Ayyagari Sitaratnam**

Professor & Chairperson Board of Studies

Dept of Telugu

Andhra University, Visakhapatnam

*Members*

**Smt. Jhansi Rani Bongarala**

Head of the department, English

GDC, Tekkali

**Dr. Jagannadha Bisoi**

Head of the Department

Odia, GDC, Tekkali

**Dr. Vijaya Bharati**

Professor, Department of Hindi

Andhra University

**Dr. B. Gowri Sankar**

Head of the Department, Telugu

Gayatri College of Science & Technology

Srikalulam

**Sri. Vanagala Tirumala Rao**

Lecturer in Telugu, GDC, Tekkali



# Invitation



**GOVERNMENT DEGREE COLLEGE, TEKKALI**  
(Reaccredited by NAAC with 'B' Grade)

We cordially invite you to  
**ONE DAY NATIONAL SEMINAR**

On  
**WOMEN IN LITERATURE**

సాహిత్యంలో మహిళ

साहित्य में नारी

Telugu, Hindi, Oriya, English  
(Sponsored by CPDC & Alumni)

## Inaugural Function

On  
17th March, 2023(Friday) at 10.00AM  
at Seminar Hall, GDC Tekkali

*President:*

**Dr. T. Govindamma**, Principal, GDC Tekkali

*Chief-Guest :*

**Dr. Nandamuri Lakshmi Parvathi**  
Chairperson, Telugu Akademi, A.P

*Guest of Honour:*

**Prof. Nimma Venkata Rao**  
Honorable Vice-Chancellor, Dr. B.R. Ambedkar University, Srikakulam.

*Keynote Address*

**Sri M.S.V Gangaraju**, Poet, Writer, Translator

*Spl. Guest:*

**Sri Duvvada Srinivasa Rao Garu**, MLC, A.P

*Special Invitees:*

**Smt. Duvvada Vani**, ZPTC, Tekkali  
**Dr. Killi Krupa Rani**, EX-Central Minister

**Dr. Ayyagari Sitaratnam**  
Convener

**Sri V. Luke Paul**  
IQAC Coordinator

## Resource Persons

**Prof. S. Kamalakara Sharma**  
Dept of Telugu, Osmania University,  
Hyderabad, Telangana

**Dr. Pathan Khasim Khan**  
Asst. Professor of Telugu, Modern languages  
Aligarh Muslim University, Aligarh, Uttar Pradesh.

**Prof. SVSS Narayana Raju**  
Dept of Hindi, Central University,  
Thiruvurur, Tamilnadu  
School of Social Sciences & Humanities

**Dr. Chandrasekhar Das**  
Asst. Professor, Dept of Oriya,  
SKGC College, Parlakimidi, Odisha

**Dr. K. Surya Chandra Rao**  
Dept. of English, Principal, GDC, Pathapatnam.

**Prof. Ayyagari Sitaratnam**  
Chairperson of Board of Studies, Dept of Telugu,  
Andhra University, Visakhapatnam

**Prof. J. Vijaya Bharati**  
Dept. of Hindi, Andhra University,  
Visakhapatnam

**Dr. K. Raja Manikyam**  
Assistant professor, Dept. of English,  
Andhra University, Visakhapatnam.

## Valedictory Function

*President*

**Dr. T. Govindamma**  
Principal, GDC Tekkali

*Chief Guest*

**Sri T. Rahul Kumar Reddy** I.A.S  
Sub-Collector, Tekkali

*Guest(s) of Honour:*

**Sri Lammatha Madhusudhana Rao**  
Philanthropist & Alumni Association Member

**Sri Narayana Murthy**, Rtd. Teacher  
Philanthropist

**Dr. B. Satish Kumar**  
Vice Principal

**Principal & Staff**

- 1) The paper should be written keeping in view of the publication immediately after the seminar.
- 2) The paper should be typed in using font Times New Roman with 12.
- 3) Full paper should be submitted through to the mail ID: [sitaratnam3@gmail.com](mailto:sitaratnam3@gmail.com) on or before 15th March, 2023.

## हिंदी विभाग

1. आधुनिक हिंदी नाटकों में स्त्री  
प्रो. एस.बी.एस.एस. नारायण राजू
2. आदिकालीन काल्यों में नारी  
प्रो. जे. विजया भारती
3. उपन्यास साहित्य में नारी  
डॉ. टी. गोविंदम्मा, टी. हारिका
4. मोहन राकेश कृत "आषाढ़ का एक दिन" : मल्लिकार्जुन  
आचार्य बी. सुभा
5. सृष्टि का सुंदर रूप - नारी  
बी. सुगुना कुमारी
6. हिन्दी प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी की अभिव्यक्ति  
डॉ. आर. श्रीनिवासराव पात्रो
7. डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में नारी: एक अध्ययन  
प्रो. वै. वेंकटलक्ष्मी
8. महीप सिंह के कथा - साहित्य में कामकाजी नारी  
डॉ. बी. लक्ष्मी
9. भारतीय साहित्य के विभिन्न कालों में नारी की स्थिति  
श्रीमति यू. वारिजा
10. चित्रा मुदगुल के उपन्यासों में नारी चित्रण  
डा. के. अनिता
11. आत्मकथाओं में चित्रित नारी जीवन के सामाजिक पक्ष  
पेडाली रंगा ज्योति

12. उषा प्रियंवदा कि कहानियों में नारी के विविध रूप  
आई. संतोष कुमार
13. प्रेमचंद कृत "बड़े घर की बेटा" कहानी में आनंदी का चित्रण  
एम. हेमावती
14. यशपाल की कहानियों में नारी  
एन. इन्दुवदना
15. आधुनिक हिंदी उपन्यासों में कामकाजी नारी  
- डॉ. सरोजिनी वेडगि
16. आधुनिक काल में नारी की स्थिति  
डॉ. जी. मोहन राव
17. वीरेन्द्र जैन के उपन्यासों में नारी  
के. प्रमीला
18. गातांजलि श्री के 'माई' उपन्यास में नारी  
कोंडेटी. वीरभद्रम्मा
19. 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में कामकाजी नारी  
मिर्जा मासुमे फातिमा
20. हिंदी कथा साहित्य में नारी  
जी. गोवर्धन
21. चंद्रकाता के उपन्यासों में नारी  
आम्रपालि गैक्वाड
22. नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नारी  
पी पूर्णिमा

# भारतीय साहित्य के विभिन्न कालों में नारी की स्थिति

श्रीमति यू. वारिजा

हिन्दी प्राध्यापिका

शासकीय स्नातक महाविद्यालय

पाडेरू।

दूरभाष 8790952412

Mail ID : varijabhasuru@gmail.com

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति कई वर्षों पुरानी है। आदिकाल से लेकर आज वर्तमान समयवधि में भी नारी हमारी सभ्यता एवं संस्कृति में पूजनीय है। नारी का स्थान सर्वोपरी है। नारी के बिना कोई भी कार्य साध्य नहीं है। स्त्री ही आदि शक्ति है जो भारतीय समाज में सृष्टि की है। नारी के विभिन्न रूपों से हमारी सभ्यता एवं संस्कृति सुपरिचित भी है। वैसे ही हमारे साहित्य में भी नारी के सभी रूपों को देखा जा सकता है।

हिन्दी साहित्य के सभी कालों में नारी आदि शक्ति के साथ साथ एक माँ, बहन, सहेली, पत्नी और मार्गदर्शिका आदि रूपों में दृष्टिगोचर होती है। एक नारी की सभी संवेदनाएँ हमारे साहित्य में लभ्य हैं। एक स्त्री में निहित कोमल भाव जैसे प्रेम, त्याग, बलिदान स्नेह, अर्पण की भावना, ममता, कोमल कौत भावनाएँ हिन्दी साहित्य, समाज और हमारी सभ्यता और संस्कृति में दृष्टिगोचर होते हैं।

यह विषय 'साहित्य में नारी' सभी पाठकों एवं रचनाकारों के लिए बहुत ही सोचनीय विषय है क्योंकि ईश्वर की सुंदर रचना नारी है। नारी की कोमलता हर कठोरता को पिघला देती है। अपने सीने से लगाकर नारी ही अपने बच्चे का पालन - पोषण कर बड़ा करती है और नारी ही बच्चे को उंगली पकड़ कर चलना भी सिखाती है। नारी के आँचल में सारा संसार समा कर ममता का एहसास प्राप्त करता है और इन्सान के लिए नारी कभी जनक की जानकी है तो कभी राम की सीता, कभी शकुंतला की शीतलता है तो कभी काली का सा क्रोध भी नारी ही दिखाती है। सती

वावित्री भी नारी ही है जो यम को भी हरा देती है और महिसासुर का वध करने वाल भी नारी ही है। जिसमें धरती की सी सहनशीलता रहती है जो गृहणी बनकर घर को स्वर्ग बनाती है।

नारी ममता की परिभाषा है प्रेम का सागर है, त्याग की मुर्ती और क्षमा का भंडार भी है। नारी कोमल, शीतल, दया, क्षमा, त्याग, ममता प्रिया, कल्पना और कविता आदि सभी

नारी ही है। नारी के अनेक रूप हैं जो किसी एक नाम में समा नहीं सकते हैं।

नारी सूर्य की किरण के समान पूरे संसार को प्रकाशमान कर जीवन प्रदान करती है। ऐसी नारी के बारे में हम हिन्दी साहित्य से कुछ उदाहरण स्वरूप विभिन्न कोलों में विविध रचनाकारों के विचारों को लेकर उनकी भावनाओं की समीक्षा कर समीक्षात्मक सार विचार स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है।

हिन्दी साहित्य में नारी का योगदान महिलाओं में बढ़ती चेतना और जागरूकता के कारण आज नारी पुरुष से साझेदारी करने में कहीं पीछे नहीं है जो सदियों से पीढ़ी - दर - पीढ़ी चली आ रही छवी को तोड़ा है। साहित्य में भी नारी की स्थिति उसकी अभिव्यक्तिकरण का सामर्थ्य को देख कर वर्तमान समाज हैरान हो रहा है क्योंकि नारी लेखन - उस लेखन को कहा जा सकता है, जो कहानी नाईका के चारों ओर घूमती है और उसका लेखक भी एक पुरुष ही होता है। ऐसे कई रचनाएं साहित्य में देखने को मिलती हैं।

साहित्य में हिन्दी की कई स्त्री लेखिकाएँ

जैसे सुभद्रा कमारी चौहान, महादेवी वर्मा, सरोजनी नायडू, उषा प्रियंवदा, डॉ पुष्पा बनसल, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, मन्नू भंडारी, मंजुल भगत, ममता कालिया, सूर्यबाला, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मृदुल आदि कई सारे नाम हमें दृष्टिगोचर होते हैं।

आज के इस अध्ययन में छायावादी युग की एक लेखिका महादेवी वर्मा जी की एक रचना "गिल्लू" जिसमें एक नारी जो एक माँ की भाँति ममता - मयी नारी का रूप दिखता है जो एक पशु जीव को नवजात शिशु की तरह पूरी ममता, दया, करुणा जैसे कोमल भावों से एक गिलहरी की तिमरदारी करते हुए उसे जीवन प्रदान कर अपने जीवन परियंत उसका लालन-पालन कतरी है और अपने बच्चे की तरह अपने साथ उनकी कठिन परिस्थितियों में भी साथ न छोड़ते हुए अपने साथ रखती है तो उसे देखकर ऐसी नारी को शत-शत प्रणाम करने का मन करता है।

ऐसी श्रेष्ठ ममता मयी नारी का एक और कठोर परिश्रमी भाव भी हमें देखने को मिलता है जो हम सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की कविता में देख सकते हैं। निराला जी द्वारा लिखित कविता - "वह तोड़ती पत्थर" जिसमें एक नारी को बहुत ही दीन-हीन स्थिति में और कड़कते धूप भरी दोपहरी में कठोर परिश्रम कोरते हुए दिखाया गया है। इस कविता में नारी का त्याग, बलिदान, कठोर परिश्रम एवं एक श्रामिक का रूप देखने को मिलता है।

साहित्य में ऐसे और भी कई उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं अर्थात् नारी जहाँ एक ओर ममता मयी, दया रूपी, करुणा मूर्ती जैसे कोमल भावों को रखती है वैसे ही दूसरी ओर

कठोर परिश्रमी, साहसी एवं दीन दयावान स्त्री अपने जीवन की लड़ाई को लड़ती हुई दिखती है। ऐसे एक स्त्री के दोनो पहलू हमको हमारे साहित्य में ही परिलक्षित होते हैं।

ऐसी एक नारी ही सृष्टि निमार्ति, परिवार की मार्गदर्शिका, बच्चों को उंगली पकड़ कर चलना सिखाने वाली माँ, जीवन में अपनी सफलता के लिए इस कठोर संसार का सामना करते हुए अपने जीवन परियंत संघर्षमय जीवन का सामना करते हुए वर्तमान समय में नारी अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए भरपूर प्रयासरत है और इक्कीसवीं सदी की नारी श्रेष्ठता को प्राप्त कर भी रही है।

संदर्भ ग्रंथ :-

- 1 - सविता पाटिल जी की कविता
- 2- महादेवी वर्मा जी की कहानी
- 3 - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की कविता
- 4- <https://Edubasefoundation.edi>
- 5- <https://WWW.bookshindi.com>

“नारी” “गिल्लू”

“वह तोड़ती पत्थर”



Chief Guest Dr. Nandamuri Lakshmi Parvathi addressing ..



Felicitation to Guest of Honour Vice Chancellor  
Dr. B. R. Ambedkar University, Srikakulam Prof. Nimma Venkata Rao



Valedictory function Chief Guest Tekkali Sub - Collector  
Sri T. Rahul Kumar Reddy, IAS with the staff



**ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల, టెక్కలి**  
**Government Degree College, Tekkali**  
శ్రీకాకుళం జిల్లా, ఆంధ్ర ప్రదేశ్

తెలుగు, హిందీ, ఒరియా, ఇంగ్లీష్ విభాగాలు  
Departments of Telugu, Hindi, Oriya, English



సాహిత్యంలో మహిళ  
Women in Literature  
साहित्य में नारी  
ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନାରୀ



Honorary Editor  
Prof. T. Govindamma

Editor  
Prof. Ayyagari Sitaratnam

© Prof. Ayyagari Sitaratnam & Prof. T.Govindamma 2023

**All rights reserved**

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

First Published in April 2023

**ISBN: 978-93-5741-626-9**

**BLUEROSE PUBLISHERS**

[www.BlueRoseONE.com](http://www.BlueRoseONE.com)

[info@bluerosepublishers.com](mailto:info@bluerosepublishers.com)

+91 8882 898 898

**Distributed by:** BlueRose, Amazon, Flipkart

# INDEX

## KEYNOTE ADDRESS

**Sri M.S.V. Gangaraju**

Poet, Writer, Translator, Orissa

## తెలుగు విభాగం

1-131

1. సనాతన సాహిత్యంలో మహిళ  
ఆచార్య సాగి కమలాకర శర్మ
2. శతాబ్ది సూరీడులో స్త్రీ  
డా. పతాన్ కాశిమ్ ఖాన్
3. తెలుగు సాహిత్యంలో మహిళల అస్తిత్వాలు  
డా. అయ్యగారి సీతారత్నం
4. అట్టాడ అప్పలాయుడు కథలలో స్త్రీపాత్రల చిత్రణ  
డా. తారకేశ్వరరావు చౌదరి
5. పతనం నుంచి పరివర్తన దిశగా 'రమాదేవి'  
డా. దార్లపూడి శివరామకృష్ణ
6. అమాయకత రూపం - కాంతం  
డాక్టర్ బి. శ్రీనివాసరావు
7. పోరాట దృక్పథ స్త్రీకి ప్రతీక - కాటి చిలుక  
సాహుకారు లలిత
8. విహారి కథలు - స్త్రీ చైతన్యం  
డా. బొడ్డూరు విజయేశ్వరరావు
9. ఆడవాళ్ళు గొప్పవాళ్ళు కథా విశ్లేషణ  
డా. ఎన్. సత్యనారాయణ
10. విషాందాంత తిరుగుబాటు చరిత్ర - సావిత్రి  
భమిడిపాటి గౌరీశంకర్
11. కథాసాహిత్యంలో మహిళ  
మురహరి రాథోడ్

12. వేంపల్లి గంగాధర్ కథా - సాహిత్యంలో మహిళ  
ఎన్. వెంకట రవి కుమార్
13. సాహిత్యంలో మహిళ  
కె. అమృత జ్యోత్స్న
14. తెలుగు నాటకరంగం - సాహిత్యంలో స్త్రీల పాత్ర  
యం.డి. అబ్దుల్ ఖలీమ్
15. నల్లపూసలు - నాంచారి పాత్ర  
మార్తల పవన్ కుమార్ రెడ్డి
16. రాయలసీమ కథలు - స్త్రీల సమస్యలు  
మోపూరు భైరవేశ్వర
17. అమ్మ  
దూర్వాసుల యశోద
18. అయ్యగారి సీతారత్నం కథలు - స్త్రీ పాత్రల విశిష్టత  
హిమబిందు వేదుల
19. ఎండ్లూరి మానస కథలలో స్త్రీ పాత్రల చిత్రణ  
డాసరి లలితమేరి
20. తిరుమల రామచంద్రగారి స్వీయ చరిత్రలో స్త్రీమూర్తులు  
వడ్డాది బాలగాయత్రి
21. నీలి మేఘాలు - వివాహ వ్యవస్థ ఒక విశ్లేషణ  
ఎమ్. రాధాకుమారి
22. కాలాతీత వ్యక్తుల నవల - స్త్రీ పాత్రల విశ్లేషణ  
రాచపూడి జయ సుశీల
23. నానీ కవిత్వంలో మహిళ - పరిశీలన  
డా. రత్నశేఖర్ కట్టెపోగు
24. "జవదాటి ఎఱుగని బలిజేపల్లి వారి చంద్రమతి"  
వానగాల తిరుమలరావు
25. "బమ్మెర పోతన నంది తిమ్మనలు తీర్చి దిద్దిన సత్యభామ"  
చల్ల వెంకటేష్

## నీలి మేఘాలు - వివాహ వ్యవస్థ ఒక విశ్లేషణ

ఎమ్.రాధాకుమారి

తెలుగు అధ్యాపకురాలు,

GDC PADERU

భారతీయ సంస్కృతిలో కేంద్రీయ ప్రయోజనాలన్నీ పురుషులే. ఏ సంస్కృతికైనా మాల స్తంభాలు. కాని స్త్రీలను అడుపులో ఉంచుతే మొత్తం సామాజిక జీవన విధానాన్నే చేయ వచ్చని నమ్ముతుంది పితృస్వామ్య వ్యవస్థ.

“మేం కూడా పురుషుల వలే మానవులం. విచక్షణా జ్ఞానం ఉన్న వాళ్ళం.” అని రీరాలకూ, మనస్సుకూ, వివాహ వ్యవస్థకు సంబంధించి, తరతరాలుగా, విశ్వాసాలుగా పోయిన ఎన్నో వ్యధలను భగ్గుం చేయుటకు స్త్రీవాద సాహిత్యం బయలు దేరింది.

1972-92 మధ్యకాలంలో స్త్రీ వాద కవితా ధోరణులతో వచ్చిన కవితా సంకలనం “నీలిమేఘాలు”. ఇందులో ఆధునిక మహిళ ఆర్తి, ఆక్రోశం కనిపిస్తుంది. ఓల్గా సంకలనం “నీలిమేఘాలు” పుస్తకంలో అనేక కొత్త రచయిత్రుల రచనలు, అందులో స్త్రీల స్థితి, పీడన, స్వేచ్ఛారాహిత్యాన్ని, బానిసత్వాన్ని, రకరకాల సంప్రదాయాలను, ఆచారాలను తన స్వేచ్ఛా ప్రియత్వాన్ని ప్రకటించారు. “నీలిమేఘాలు” కవితల్లో స్త్రీ వివాహ వ్యవస్థను గూర్చి ఈ నా పత్ర సమర్పణ ద్వారా విశ్లేషించానేది ఉద్దేశ్యం.

“తొలిగా నువ్వు పుట్టిన ఇంటిని పిచ్చిగా ప్రేమిస్తావు. ఎంత పిచ్చిగా అంటే ఆ గోడలలో దాక్కున్న ప్రతి ఇటుక నాదేనన్నంతగా”-వాణీ రంగారావు (తివాచీ)

“మెల్లగా బాల్యపు చాయలు వదిలి పెడుతుండగా ఇక్కడే నన్ను తీర్చి దిద్దటం లైంది. వంటింటి తనాన్ని నేర్పారు నాకు. -విమల (వంటిల్లు)

అమ్మ కొడుకును ఒకలా కూతురుని ఒకలా పెంచడం పితృస్వామ్య వ్యవస్థ నేర్పిన

“ఆచారాల చెత్త బుట్టలో, సాంప్రదాయాల మురికి కాలువలో మేం, చిరునవ్వులన్నీ సుకోలేక, అంగాంగాలకు తాళం వేసుకుని, భౌతిక పరదాలు వేసుకుని మాపై మీ నాలను కాలరాసి, సమూహంగా సమాజంలో వెళ్ళుతుంటే”-కుప్పిలి పద్మ (పాతరోత)

పెళ్ళి తర్వాత తన ఊహలు, ఇష్టానిష్టాలతో ప్రమేయం లేని భర్త కోసం సాఫల్యం కుంటుంది స్త్రీ.

“నా శరీరాన్ని చేరుకొని, ఊ కలల్ని, నా జీవితాన్ని, నువ్వు స్వాహా చేస్తే అదే నా జీవిత పరమార్థమని” - వసంత కన్నాభిరాన్ (గృహమే కదా స్వర్గ సీమ)

అనాటికి, ఈనాటికి అనేక యంత్ర సౌకర్యాలతో వంటిట్లో మార్పులు వచ్చినా స్త్రీ వంటింటి బానిసత్వం తప్పలేదు.

“మనం రక్తం పీల్చేచి, మన అశల్మి, కలల్ని కాజేసి కొద్ది కొద్దిగా జీవితాంతం పీక్కుతింటున్న రాకాసి గర్ద ఈ వంటిల్లు. - విమల (వంటిల్లు)

పురుషాధిక్య ప్రపంచంలో అణిచివేత నుండి విముక్తి పొందాలని స్త్రీ ఆర్థికంగా నిలద్రొక్కుకున్నా, ఇంటా బయట ఎన్ని సమస్యలు రోజుకు.

గడియారంలో తిరిగే సెకండ్ల ముల్లుకు నా చేతులు ఎప్పుడు పోటీయే”

“పతి దేవుని టేబుల్స్ కాఫీ కప్పుగా, మీల్స్ కారియర్గా, పిల్లల లంచ్ బాక్సుగా, బహుమతాభినయ పోటీల్లో నా చేతులకెప్పుడు ఫస్ట్ ప్రైజ్”

‘అప్పటి వరకు పనులు కామా పెట్టి బయలు దేరి ఆఫీసుకు బస్సుకు వేచి ఆలస్యంకాగా, ఆడవాళ్ళకు ఎందుకమ్మా ఉద్యోగం’ అన్న మేనేజర్

“ఇక సాయం కాలం బస్సులో ఏనాడూ ఆడదాన్ని చూడనట్టు చూచే, ఒంటి మీద పాకే మగ పురుషుల చూపు పురుషుల్ని దులుపుకొని, రష్ గా ఉందనే అవకాశంలో, ఆడదాని శరీర మాంసాన్ని తాకి ఆనందించే స్పర్శకు”

“సాయంత్రం ఇల్లు చేరితే, ఆఫీసు వదలి అరగంటయింది. ఎందుకాలస్యమైందని అనుమానం మొగుడు స్వాగత గీతం ఆలపిస్తాడు”

“కామా పెట్టిన దగ్గర నుంచి మళ్ళీ పనులందు కుంటాయి.”

“నా చేతులు మార్పు లేని జీవన కావ్యంలో మారని మహిళ దిన చర్య ఇది.”

“నేటి చదువు కున్న స్త్రీకి తప్ప లేదు ద్విపాత్రాభినయం” - మందరపు హైమావతి - (“ద్విపాత్రాభినయం”)

స్త్రీకి మాతృత్వం ఒక వరం అన్న పితృస్వామ్య వ్యవస్థ, తన ప్రాణం, శరీరం మరు జన్మ ఎత్తినంతగా పురిటిలో పోరాడి బిడ్డకు ప్రాణం పోసిన ధీశాలి అని పొగడదే. పురుషుడు మాత్రం తన వంశానికి పేరునిస్తాడు అన్నారు. కొండేపూడి నిర్మల తన “లేబర్ రూమ్” కవితలో. మందరపు హైమావతి - “సర్దుకుపో” కవితలో భర్త తాగి వచ్చి భార్యా పిల్లల్ని

కొండే పోయినా, “సర్దుకుపో” అంటుంది తల్లి. తన అందం. పాతబడి, క్రొత్త అందంవైపు పోరాడు చూపు తున్న తన భర్త గూర్చి తల్లికి చెప్పినా, అనాటి నుండి మగాడికి ఉన్నదే బలా, ఆడదానివి నువ్వే” సర్దుకు పోవాలి” అంటుంది తల్లి. అమ్మ ఇంటి నుండి డబ్బు, పిల్లలను తెచ్చుని సాదింపు. వారికి మనసులు అక్కర లేదు. మనీ కావాలి.

“మట్టి బొమ్మల కన్నా హీనంగా చూసే ఆ కొంపలో వుండలేనమ్మానేను, ఇక్కడకు వచ్చేస్తానే నేను, ఆడదానికి పెట్టినాక చావునైనా, బ్రతుకైనా అత్తగారింట్లోనే పుట్టింట్లో అడుగు పెడితే విలువుండదు. సంఘంలో “సర్దుకు పోవాలమ్మా ! సర్దుకుపోవాలి!”

“నేను మనిషినేగా, తరతరాలుగా యుగయుగాలుగా నేను మాత్రం ఎందుకు సర్దుకు పోవాలి, ప్రపంచం అంతటికీ స్వాతంత్ర్య వచ్చినా, నేనింకా బానిసత్వ అంధకారంలో మగ్గి పోవలసిందేనా?”

“సర్దుకు పో” ఈ నాలుగు అక్షరాలే స్త్రీ జీవితాన్ని బలి కోరే శాపాలు”

“సర్దుకు పో” ఈ నాలుగు అక్షరాలే స్త్రీని అగ్నికి ఆహుతి చేసే సాధనాలు.

“పాలింకి పోవడానికునట్లు, మనసింకి పోవడానికి మాత్రలుంటే ఎంత బావుండు”

పాడిబండ్ల రజని - “అబార్షన్ సెంటిమెంటే”

ఇలా పితృస్వామ్య వ్యవస్థ విధించిన నియమాల్లో స్త్రీ బలొతుంది. పెళ్ళికి ముందు ఆడపిల్ల లక్ష్మీకరం అని అపురూపంగా చూసి, తల్లిదండ్రులు మగని చేతికిచ్చాక, కష్టమో నష్టమో వెంటిల్లో నీది అంటారు. ఆడపిల్ల మట్టింట్లో ఎక్కెవ కాలం. ఉండకూడదు, సమాజం ఒప్పుకోదు అంటారు.

తల్లిదండ్రులు ఎంతో కష్టంతో, కంటికి రెప్పలా కాపాడుకుంటు ఆడపిల్లని మగవాళ్ళకు ఎందులో సాటిలేని విధంగా చదువులు, ఉద్యోగాలు చేయిస్తున్నా, పెళ్ళి తరువాత మహిళ తన జీతంతో పుట్టింటికి ఏం కొనాలన్నా భర్త అనుమతి ఉండాలి.

ఆడపిల్ల జీతం ముట్టుకుంటే తనకు అల్లుని వద్ద చిన్నతనం, సమాజంలో అలుసుతనంగా భావిస్తారు తల్లిదండ్రులు. ఆడపిల్లకు పెట్టలేగాని ఆడపిల్ల నుండి పుచ్చుకోరాదని మన భారతీయ వ్యవస్థలో ఉన్న నియమమే పురుషులకు బలమైనది.

వరుణ్ణి బజారులో విక్రయ వస్తువుగా కొనుక్కున్న ఆడపిల్ల, కొనుక్కున్న వస్తువును తన ఇంటికి తెచ్చుకొని వాడుకోవాలి గాని, తను కొనుక్కున్న మగాడి వద్ద కెళ్ళి ఇంటి పేరు మార్చుకొని, నానాచాకిరి చేసి, బానిస బ్రతుకు ఎందుకు పడాలి. స్త్రీ ని సంస్కృతి

సాంప్రదాయాల పేరుతో అణగ ద్రోక్కాలని ఆంక్షలు పెడతారు గాని, కొనుక్కున్న మగాడి క్రింద బానిస బ్రతుకెందుకని ఆలోచించరే తల్లిదండ్రులు. స్థలాన్ని కొన్నంతగా మగాడిని డబ్బు పోసి కొనుక్కున్న ఆడపిల్ల రిజిస్ట్రేషన్ కూడా చేసుకోవాలి కదా.

మెట్టినిల్లు కాదు పుట్టింట్లో తన భర్తతో కాపురం ఉంటేనే నేటి పురుషులకు బానిసత్వం తెలుస్తుంది. అప్పుడే స్త్రీకి స్వేచ్ఛా, విముక్తి వస్తుంది. పూర్వం స్త్రీల జీవనంకు ఇప్పటి జీవనంలో మార్పులు వచ్చినట్లే, ఇంకా అణచి వేత నుండి విముక్తి రావాలంటే పితృస్వామ్య వ్యవస్థ విధించిన వివాహ వ్యవస్థలో మార్పురావాలి.

“నాకూ ఒకమ్మాయి పుట్టాక అమ్మకు తన తప్పేమిటో తెలిసేలా చేస్తా శ్రీమతి -  
“పెద్దవ్వనీ చెప్తా“



# శ్రీవర్ర చెన్నారెడ్డి ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల



పలమనేరు, చిత్తూరు జిల్లా



**భావోపేక్ష ప్రత్యేక సంచిక**

Journal of Literary, Culture & Language Studies

Vol.19 Issue. 08 Spl.Edition - August 2022 - ISSN No.2456-4702

ICSSR Sponsored Two Day National Seminar

**“Role and Inspiration of Telugu Poetry and Poets in Attaining Indian Independence”**

ఐసియస్ఎస్ఆర్ రెండు రోజుల జాతీయ సదస్సు  
**“స్వాతంత్ర్య సాధనలో తెలుగు సాహిత్యం, కవుల పాత్ర”**

18 & 19 ఆగస్టు, 2022



**నిర్వహణ**

**డా॥ ఇ.వాసు**

**తెలుగు శాఖ**

శ్రీవర్ర చెన్నారెడ్డి ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల, పలమనేరు, చిత్తూరు జిల్లా



**ICSSR Sponsored Two Day National Seminar**

*18-19 August 2022*



**“Role and Inspiration of Telugu Poetry  
and Poets in Attaining Indian Independence”**

**(స్వాతంత్ర్య సాధనలో తెలుగు సాహిత్యం, కవుల పాత్ర)**

సంపాదకులు

**డాక్టర్ ఇ.వాసు**

సహ సంపాదకులు

**డాక్టర్ పి.జయచంద్రుడు**

**డాక్టర్ కె.శ్రీనివాసులు రెడ్డి**

**డాక్టర్ కె.ఈశ్వరబాబు**



తెలుగు శాఖ

**శ్రీవర్ర చెన్నారెడ్డి ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల**

పలమనేరు, చిత్తూరు జిల్లా, ఆంధ్ర ప్రదేశ్

స్వాతంత్ర్య సాధనలో తెలుగు సాహిత్యం, కవుల పాత్ర  
జాతీయ సదస్సు ప్రత్యేక సంచిక

భావవీణ ప్రత్యేక సంచిక

ISSN No. : 2456-4702

RNI No. APTEL/2003/12253

UGC CARE List Group-1 Journal under Arts and Humanities Category

ప్రథమ ముద్రణ : ఆగస్టు 2022

ప్రతులు : 500

కాపీలకు : తెలుగు శాఖ, శ్రీవర చెన్నారెడ్డి ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల,  
పలమనేరు, చిత్తూరు జిల్లా

గమనిక : ఈ సంచికలోని వ్యాసకర్తల అభిప్రాయముతో సంపాదక వర్గమునకు  
సంబంధం లేదు - సంపాదక వర్గం.

ఎడిటోరియల్ చిరునామా: హెల్త్ హౌస్ అపార్ట్మెంట్స్, పోస్టల్ కాలనీ, 4వ లైను, గుంటూరు-522 002.

విషయ సూచిక

|                                                                                                      |    |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------|----|
| 1. చరిత్రకెక్కని స్వాతంత్ర్య సమరయోధుడు “అల్లూరి సత్యనారాయణ రాజు” - ఆచార్య ఆర్.రాజేశ్వరమ్మ            | 1  |
| 2. మాకొద్దీ తెల్లదొరతనం గేయం - జాతీయోద్యమంపై ప్రభావం - డా.ఇ.వాసు                                     | 4  |
| 3. కరుణశ్రీ జాతీయోద్యమ కవిత్వం - డా.గుమ్మనూరు ఉషారాణి                                                | 7  |
| 4. జాతీయోద్యమ జయపతాక - రాయప్రోలు కవిత - డా.కరణం శ్రీనివాసులురెడ్డి                                   | 10 |
| 5. భారత జాతీయోద్యమ సాధనలో తొలి తెలుగు సాహితీ కిరణం -<br>చిలకమర్తి లక్ష్మీ నరసింహం, డా.పి.జయచంద్రుడు, | 13 |
| 6. జంధ్యాల పాపయ్య శాస్త్రి “దేశభక్తి” - డా.కె.ఈశ్వరబాబు                                              | 16 |
| 7. జాతీయోద్యమంలో తెలుగు వారి పాత్ర - డా.ఎన్.భీమన్న                                                   | 19 |
| 8. ఆంధ్రా సాహిత్యంలో దేశభక్తి కవిత్వము - డా.వి.కృష్ణవేణి                                             | 21 |
| 9. నేనూ నా దేశం - విప్లవ పార్టీ గదర్ ఆవిర్భావం - డా.మన్యం నరసింహులు                                  | 24 |
| 10. స్వాతంత్ర్యోద్యమం తెలుగు కవులు - డా.పి.కుమార్ నీరజ                                               | 27 |
| 11. ఆంధ్రుల జాతీయోద్యమ కవిత్వం - డా.డి.యువశ్రీ                                                       | 31 |
| 12. రథచక్రాలు నవలలో చిత్రితమైన జాతీయోద్యమం - ఒక విశ్లేషణ - డా.ఎం.రాఘవరెడ్డి                          | 34 |
| 13. ధీశాలి, దేశబాంధవి - దువ్వూరి సుబ్బమ్మ - జి.మాధవీలత                                               | 38 |
| 14. దేశభక్తుడు, జాత్యాభిమాని జాషువా - ఐ.సజని                                                         | 41 |
| 15. జాతీయోద్యమ కవిత్వం - విహంగవీక్షణం - డా. యు. రమ్యజ్యోతి                                           | 44 |
| 16. జాతీయోద్యమ సాహిత్యం - కవులు - డా.దార్లపూడి శివరామకృష్ణ                                           | 47 |
| 17. జాతీయోద్యమంలో తెలుగు కవి - డా.బి.శ్రీనివాసులు నాయక్                                              | 49 |
| 18. జాతీయోద్యమ స్ఫూర్తి కావ్యాలు - కవుల పాత్ర - కవాదపు లలిత                                          | 51 |
| 19. పుట్టపర్తి రచనల్లో జాతీయోద్యమ స్ఫూర్తి - డా.హరీష్ కుమార్ శ్రీధర                                  | 54 |
| 20. జాతీయోద్యమంలో తెలుగు కవుల కవిత్వం - ఒక అవలోకనం - ఎం.రాధాకుమారి                                   | 57 |
| 21. స్వాతంత్ర్య పోరాటంలో తెలుగు కవుల పాత్ర - ఒక సమీక్ష - డా.డి.సునీతాదేవి                            | 60 |
| 22. భారతదేశ స్వాతంత్ర్యోద్యమ సాహిత్యంలో కృష్ణశాస్త్రి కవిత్వం - ఆర్.విజయకుమారి                       | 63 |
| 23. జాతీయోద్యమంలో తెలుగు కవిత్వం పాత్ర - పి.కేశవులు                                                  | 66 |
| 24. స్వాతంత్ర్య ఉద్యమములో తెలుగు ప్రాభవపు ప్రభావము - డా.పి.రేవతి రెడ్డి, డా.సి.యన్.లత                | 69 |
| 25. జాతీయ ఉద్యమంలో తెలుగు కవిత్వం పాత్ర - డా.సీతా విజయులు రెడ్డి,<br>డా.పి.వెంకటేశన్, డా.జి.గంగయ్య   | 72 |

# జాతీయోద్యమంలో తెలుగు కవుల కవిత్వం - ఒక అవలోకనం

ఎం.రాధాకుమారి, తెలుగు లెక్చరర్, ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల, పాడేరు - 531 036

ఏ ఉద్యమానికైనా నాయకత్వం తప్పకుండా ఉండాలి, ఉంటుంది. ఉద్యమం తీరు తెన్నులను ఉద్యమదశలను నిర్ణయించడానికి నాయకత్వం అవసరం. అలాంటి నాయకులను రచయితలు, కళాకారులు సందర్భానుసారంగా ప్రశంసలతో, ప్రస్తుతులతో గౌరవిస్తారు. ఉద్యమం తీవ్రరూపం ధరించి సంఘర్షణలు జరిగినప్పుడో, ఉద్యమం దీర్ఘకాలికపోరాటమైనప్పుడో నాయకులు మరణిస్తే రచయితలు, కళాకారులు వాళ్ళకు స్మృతిరూపంలో నివాళులర్పిస్తారు. భారత జాతీయోద్యమంలో ఇలాంటి రచనలు అనేకం వచ్చాయి. గాంధీజీ లాలాజపతిరాయ్, గోపాలకృష్ణ గోఖలే, దాదాబాయి నౌరోజీ, బాలగంగాధర్ తిలక్ వంటి నాయకుల మీద అనేక కావ్యాలు రచించారు తెలుగు కవులు. ఈ నాయకులలో అవతారపురుష లక్షణాలను కూడా దర్శించారు. కొందరు కవులు మరికొందరిని ఆదర్శ పురుషులుగా భావించారు. పురాణపద్యాల బాణీలలో వీళ్ళను కీర్తించడం కొన్ని చోట్ల కనిపిస్తుంది. గాంధీని గురించి తుమ్మల సీతారామమూర్తి రాసిన 'అత్మకథ', 'మహాత్మకథ', మంత్రిప్రగడ భుజంగరావు రాసిన 'గోపాలకృష్ణ గోఖలే', 'దాదాబాయి నేరోజీ చరిత్రము', మునగపాటి విశ్వనాథశాస్త్రి రాసిన 'గాంధీ దేవుడు', మరింగంటి శేషచార్యులు రాసిన 'శ్రీ గాంధీ భారతము' వంటి కావ్యాలు గుర్తింప దగినవి. దోమా వెంకటస్వామి గుప్త రాసిన 'మహాత్మాగాంధీ శతకము', వంటివి కూడా పరిశీలించదగినవి. తుమ్మల 'మహాత్మకథ'లో గాంధీని గూర్చి పోతన భాగవతంలోని 'పలికెడిది భాగవతము' అనే పద్యం బాణీలో కూడా అంటాడు.

పలికెడిది గాంధీకథ యట

పలికించెడివారు తెనుగు ప్రజలట దీనిం

బలికిన నూటయొనట

పలికెడ నికనొందుమఱచి బావు చరిత్రన్ - అని పూర్తిచాడు.

పాశ్చాత్య పాలకులు రావడం రావడంతోటే రెండు శాస్త్రీయ రంగాల మీద పడ్డారు. 1. వ్యవసాయం, 2. విద్యారంగం. జాతీయోద్యమ సాహిత్యంలో రెండో అంశానికి ప్రాముఖ్యం ఉంది. ఈ దోపిడి నుంచి పీడన నుంచి విముక్తి పొందాలంటే స్వతంత్రమే మార్గమని 1906 నాటికల్లా కవులు గొంతెత్తి చాటారు.

స్వాతంత్ర్యమునను గాదే

భ్యాతినీ బలముల జయంబు గను దేశంబుల్

స్వాతంత్ర్యమే మేటిదొడవు

స్వాతంత్ర్యము లేని బ్రతుకు బ్రతుకెతలపన్

అని చిలకమర్తి ప్రకటించడం జాతీయోద్యమంలో కీలకమైన అంశం. స్వాతంత్ర్యం లేని బ్రతుకు బ్రతుకేకాదంటాడు. ఈ మాట అక్షర సత్యం.

గాంధీజీ రాజకీయాల్లోకి రాకముందే అస్పృశ్యతను నిలదీసిన తెలుగు కవులున్నారు. 1909లో 'ఆంధ్రభారతి'లో వచ్చిన 'మాలవాండ్రపాట', 1915లో మంగిపూడి వెంకటశర్మ రచించిన 'నిరుద్ధభారతము', 1911లో గురజాడ రాసిన 'లవణ రాజకథ'. 'లేదురా యిటువంటి భూమి' అని మనం ఉప్పొంగిపోయే మన దేశంలో వేలయేళ్ళుగా అమలులో ఉన్న అంటరానితనాన్ని నిలదీశాయి.

కుసుమధర్మన్న చైతన్యం గాంధీజీ నిర్మాణ కార్యక్రమానికే పరిమితమైనదికాదు. అది ప్రతిఘటనా చైతన్యానికి చిటారు కొమ్మ. ఆయన రాసిన 'నల్లదొరతనము' ప్రత్యామ్నాయ విప్లవ ప్రతిపాదన. డా॥ బి.ఆర్. అంబేద్కర్ భావజాలానికి తెలుగు అక్షరాల అల్లిక. అందులో కొన్ని పంక్తులు ఇలా ఉన్నాయి.

వర్ణాశ్రమ ధర్మము వదలి తిరుగుటచేత

వచ్చేను వెలి మీకంటారు

వేద పఠన బ్రాహ్మణులు విడిచేరు

క్షాత్ర ధర్మము క్షత్రియులు మానేరు

కులవృత్తి కోమట్లు మరిచేరు

శూద్రవరులు సేద్యము వీడేరు

మమ్ము లొంగదీసి పంగనామాలు పెట్టేరు - అంటాడు.

ఆంగ్లప్రభుత్వ కాలంలో అన్ని వర్ణాల వాళ్ళు తమ వర్ణపరిధులు దాటి కొత్త రంగాల్లోకి ప్రవేశిస్తూ, దళితులను మాత్రం పాత పద్ధతులలోనే బతకమనే హైందవ కుటీల నీతిని ధర్మన్న నిలదీశారు.

జాతీయోద్యమంలో మద్యపాన బానిసత్వం నుండి ప్రజల్ని దూరం చేయడం ఒక ప్రధానాంశం. మద్యం పేదల రక్తమాంసాలను పీల్చి ప్రజల్ని అర్థికంగా క్రుంగదీయడమేగాక, మనుషులు దేశాన్ని గురించి నమాజం గురించి ఆలోచించకుండా కూడా చేసింది. డా.బి.ఆర్. అంబేద్కర్ తాగొచ్చిన మగవాళ్ళను ఇళ్లలోకి రానీయొద్దని స్త్రీలకు ప్రబోధించాడు. జాతీయోద్యమ కాలంలో అనేక మంది కవులు తాగుడుకు వ్యతిరేకంగా ప్రజల్ని జాగృతం చేశారు. గరిమెళ్ళ,

జాలా రంగస్థామి, నీలం వెంకయ్య, నక్కా చిన వెంకయ్య  
వంటి కవులు మధ్యపాన వ్యతిరేకతను గళమెత్తి చాటారు.

కల్లుతాగి నీ యిల్లు గుల్ల సేయకు  
నీవళ్ళు రోగాలకెల్ల వడ్డి కీయకు

అన్న పల్లవితో గరిమెళ్ళ రాసిన 'కల్లు' పాట (1921)  
తాగుడువల్ల కుటుంబాలు చితికిపోతున్న తీరును వివరించి,  
స్వాతంత్ర్యసాధనకు తాగుడు మానడం అవసరమని నొక్కి  
చెబుతుంది. అలాగే జాలా రంగస్థామి భజనపాటల బాణీలో  
రాసిన పాటలు తాగుడువల్ల వచ్చే అరిష్టాలను చెప్పి  
హెచ్చరిస్తుంది (1930). కల్లుగీయడం ఆర్థిక సమస్యగానే  
గాక, వ్యక్తిత్వ సమస్యగా కూడా ఆయన గుర్తించారు.

కల్లుమానే విధము తెలియండి - జనులార

కల్లుమానే విధము తెలియండి...

చిప్పముంత జేత వచ్చును - చింపి పాతలు పైకివచ్చును  
పంచలందు పరుండ వలయును - పరువునంతను  
పాడుజేయును.

-అంటూ మధ్యపానం వలన కలిగే అనర్థాలను నొక్కి  
చెప్పాడు.

సంప్రదాయ దృష్టితోగాని, ఆధునిక దృష్టితోగాని చరిత్రను  
వర్తమానానికి స్ఫూర్తిగా తీసుకోవడం ఒక సంప్రదాయం.  
జీవితంలోను, దాని ప్రతిఫలనమైన కళలలోనూ ఇది  
సాధారణం. సామాజిక ఉద్యమాలలోను, ఉద్యమ కళలలో  
కూడా చరిత్ర ప్రధానభూమిక పోషిస్తుంది. జాతీయోద్యమ  
కాలంలో భారతదేశానికి గొప్పచరిత్ర, సంస్కృతులున్నాయని,  
మన పూర్వ నాయకులు గొప్పవీరులని వర్తమాన సమాజానికి  
తెలియజేసి ఉద్యమానికి ఊపిరిలూదే పనిని తెలుగు కవులు  
చక్కగా చేశారు. అలాంటి వారిలో దుర్బాక రాజశేఖర  
శతావధాని 'రాణాప్రతాపసింహ చరిత్ర,' గడియారం  
వేంకటశేషశాస్త్రి "శివభారతము, అమరసింహ", పుట్టపర్తి,  
పెనుగొండలక్ష్మి, మంగిపూడి వెంకటశర్మ 'దుర్గావతి, పింగళి  
'సౌందరనందము' విశ్వనాథ 'రూప్సీ లక్ష్మి' వంటి కావ్యాలు  
ఈ దృష్టితో పరిశీలింప దగినవి.

ఉద్యమ కాలంలో ఇలాంటి చారిత్రక కావ్యాలు  
రాయబడ్డాయి. ఈ కావ్యాలలోని -

ఆత్మబలము ప్రధానమై యలరుగాని

యువకరణముల బనియేమి యుత్తములకు (రాణా:  
4-224)

స్వాతంత్ర్యమున బుట్టిచావవలె (శివ. 2-33)

భారత స్వతంత్ర రాజ్యలక్ష్మికి గంతమాత్రంబు (శివ.  
2-117)

ఈ దేశ మీకొండ లీసూర్యుడీ తరు

లీవాయు వీయెండ యన్ని మావి (అమర - 8)

వంటి వాక్యాలు సమకాలీన జాతీయోద్యమ స్ఫూర్తి  
కలిగిస్తాయి.

పురాణ కథలను తీసుకొని భారత జాతీయోద్యమ  
నేపథ్యంలో పునర్వ్యాఖ్యానం చేసిన కవులు కూడా మనక  
విశ్వనాథ 'రామాయణ కల్పవృక్షం'లో బాలకాండ  
'మారీచ ఖండంలోనూ' ఈ ఉద్యమ స్ఫూర్తి కనిపి  
మారీచ ఖండంలో బంగరులేడి పాశ్చాత్య నాగరకతకు  
అనాగరకతకు అతార్కికంగా ఆకర్షితులౌతున్న భారత  
శ్రీరాముడు దానిని చూస్తూ నిస్సహాయ స్థితిలో ఉన్న  
లక్ష్మణుడు దానిని పరమ అపాయకరమైనదిగా గుర్తించే  
వర్గానికి ప్రతీకలుగా కనిపిస్తారు. కరుణశ్రీ రాసిన విజ  
కరుణశ్రీ కావ్యాలలో కూడా ఇదే ధోరణి కనిపిస్తుంది.

రౌండ్ టేబిల్ సమావేశం, ఇర్విన్ ఒడంబడికలు  
కావడాన్ని శ్రీకృష్ణరాయబారం విఫలం కావడంతో  
స్ఫూరింపజేశారు కరుణశ్రీ జంధ్యాల పాపయ్యశాస్త్రి.

"భరత సంతతి బావి సౌభాగ్యమునకు

సాగుగావున స్వాతంత్ర్య సమర రథము"

వంటి వాక్యాలలో జాతీయోద్యమం స్ఫూరిస్తుంది.  
విశ్వనాథ 'రూప్సీలక్ష్మి'లో 1857 నాటి ఉద్యమ  
తదనంతర స్వాతంత్ర్య పోరాటానికి స్ఫూర్తిగా చిత్రిం

జాతీయోద్యమంలో భరతమాతను, ఉ  
నాయకత్వాన్ని, గతచరిత్రను కీర్తించినట్లే, ఆంధ్రోద్యమ  
కూడా కవులు ఆంధ్రమాతను, గత చరిత్రను కీర్తిం  
వీరిలో అగ్రగణ్యులు రాయప్రోలు సుబ్బారావు.

"అమరావతి పట్టణమున బౌద్ధులు విశ్వ

విద్యాలయములు స్థాపించునాడు

ఓరుగల్లున వీరలాంఛనముగ

బలుశస్త్రశాలలు నిలుపునాడు"

అని రాయప్రోలు ఆంధ్రాభిమానాన్ని ఎలుగెత్తి చా  
అదే విధంగా

గోదావరీ పావనోదారవాః పూర

మఖిల భారతము మాదన్ననాడు

తుంగభద్రా సముత్తంగ గానముతోడ

కవులగానము శ్రుతి గలియు నాడు

అని విశ్వనాథ సత్యనారాయణ తెలుగునేలను కీర్తిం

ఆ తరువాత

త్రిపురనేని రామస్వామి చౌదరి

బ్రహ్మపురము మందేరా పర్లాకిమిడి మందేరా

దని వాడుకువస్తే కటకం దాకామందేరా  
గోలకొండ మనదేరా

లంగాణ మందేరా" అని చాటారు.

రత జాతీయోద్యమంలో

టుకొను మీ భరతపుత్రుడ

టుకొనుమా సుజన చరితుడ"

ని పాడినట్లే, ఆంధ్రోద్యమంలో

టుకొనుమా ఆంధ్రపుత్రుడ

టుకొనుమా ఆర్యగోత్రుడ

టుకొనుమా శుభచరిత్రుడ

టుకొనవయ్యా

ని మంగిపూడి వెంకటశర్మ తెలుగు జాతిని  
పారు.

లుగు జాతీయగీతం రాయమని పత్రికా ప్రకటన

నప్పుడు అనేకమంది కవులు గీతాలు రాసి ప్రజాశక్తి

యానికి పంపారు. వాటిలో కొన్ని పంక్తులు ఇలా

.

పాదరా ఓ తెలుగువాడా పాదరా ఓ కలిమిరేడా"

ండేపూడి లక్ష్మీనారాయణ)

మైత్రి జైకొట్టు తెలుగోడ

మెంతో ఘనకీర్తి కలవోడ

ములపల్లి శ్రీకృష్ణ)

క్ష గ్రంథాలు

త్మకథ - తుమ్మల సీతారామమూర్తి చౌదరి

రతనము - కుసుమ ధర్మన్న

రతము - గడియారం వేంకట శేష శాస్త్రి

ప్రతాప సింహ చరిత్ర - దుర్భాక రాజశేఖర శతావధాని

శ్రమ గీతాలు - త్రిపురనేని రామస్వామి చౌదరి

గండ లక్ష్మి - పుట్టపర్తి నారాయణాచార్యులు

పలనాడు వెలలేని మాగాణి రా

(పులుపుల వెంకట శివయ్య)

వంటి అనేక గీతాలు వచ్చాయి.

షేక్సపిందగీ, దొడ్డి కొమరయ్య, గొట్టిముక్కల గోపాలరెడ్డి,  
గురవయ్య, పడిశాల పిచ్చయ్య వంటి అనేకమంది యువ ఉ  
ద్యమకారులు హతులయ్యారు. తిరునగరి రామాంజనేయులు  
వంటి కవులు వీళ్ళ త్యాగాన్ని కీర్తిస్తూ కవితలు రాశారు.

"నిను గున్నతల్లిదే ధన్య జీవితమాయె

కొమరయ్య నీ జీవితం అమర జీవితమాయె"

"సైసై గోపాలరెడ్డి, రెడ్డి నీవు

నిలిచావు ప్రాణాల్తోడి"

"అమరయోధుడు నీవు గురవయ్యా

అందుకో జోహార్లు గురవయ్యా"

"విప్లవపు జోహార్లు రా

పడిశాల పిచ్చయ్య గైకొమ్మరా"

వంటి గేయాలు ఆనాడు మారుమ్రోగాయి.

"దోపిడి దొంగకు తొత్తుర నైజాం...

అబ్బవచ్చినా దెబ్బకు దెబ్బ తరిమి తరిమి కొడదాం"

- అంటూ చైతన్యపరిచారు. ఎందరో కవులు పరి పరి

విధాలుగా కవిత్వం ద్వారా యుద్ధం చేసినందువల్ల  
జాతీయోద్యమం ఆంధ్రదేశంలో ఊపందుకొన్నదని విస్పష్టంగా  
చెప్పవచ్చు.





# శ్రీవర్ర చెన్నారెడ్డి ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల



పలమనేరు, చిత్తూరు జిల్లా



**భావోద్బేగ ప్రత్యేక సంచిక**

Journal of Literary, Culture & Language Studies

Vol.19 Issue. 08 Spl.Edition - August 2022 - ISSN No.2456-4702

ICSSR Sponsored Two Day National Seminar

**“Role and Inspiration of Telugu Poetry and Poets in Attaining Indian Independence”**

ఐసియస్ఎస్ఆర్ రెండు రోజుల జాతీయ సదస్సు  
**“స్వాతంత్ర్య సాధనలో తెలుగు సాహిత్యం, కవుల పాత్ర”**

18 & 19 ఆగస్టు, 2022



**నిర్వహణ**

**డా॥ ఇ.వాసు**

**తెలుగు శాఖ**

శ్రీవర్ర చెన్నారెడ్డి ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల, పలమనేరు, చిత్తూరు జిల్లా



**ICSSR Sponsored Two Day National Seminar**

*18-19 August 2022*



**“Role and Inspiration of Telugu Poetry  
and Poets in Attaining Indian Independence”**

**(స్వాతంత్ర్య సాధనలో తెలుగు సాహిత్యం, కవుల పాత్ర)**

సంపాదకులు

**డాక్టర్ ఇ.వాసు**

సహ సంపాదకులు

**డాక్టర్ పి.జయచంద్రుడు**

**డాక్టర్ కె.శ్రీనివాసులు రెడ్డి**

**డాక్టర్ కె.ఈశ్వరబాబు**



తెలుగు శాఖ

**శ్రీవర్ర చెన్నారెడ్డి ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల**

పలమనేరు, చిత్తూరు జిల్లా, ఆంధ్ర ప్రదేశ్

స్వాతంత్ర్య సాధనలో తెలుగు సాహిత్యం, కవుల పాత్ర  
జాతీయ సదస్సు ప్రత్యేక సంచిక

భావవీణ ప్రత్యేక సంచిక

ISSN No. : 2456-4702

RNI No. APTEL/2003/12253

UGC CARE List Group-1 Journal under Arts and Humanities Category

ప్రథమ ముద్రణ : ఆగస్టు 2022

ప్రతులు : 500

కాపీలకు : తెలుగు శాఖ, శ్రీవర్ర చెన్నారెడ్డి ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల,  
పలమనేరు, చిత్తూరు జిల్లా

గమనిక : ఈ సంచికలోని వ్యాసకర్తల అభిప్రాయముతో సంపాదక వర్గమునకు  
సంబంధం లేదు - సంపాదక వర్గం.

ఎడిటోరియల్ చిరునామా: హెల్త్ హౌస్ అపార్ట్మెంట్స్, పోస్టల్ కాలనీ, 4వ లైను, గుంటూరు-522 002.

విషయ సూచిక

|                                                                                                       |    |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------|----|
| 1. చరిత్రకెక్కుని స్వాతంత్ర్య సమరయోధుడు “అల్లూరి సత్యనారాయణ రాజు” - ఆచార్య ఆర్. రాజేశ్వరమ్మ           | 1  |
| 2. మాకొద్దీ తెల్లదొరతనం గేయం - జాతీయోద్యమంపై ప్రభావం - డా. ఇ. వాసు                                    | 4  |
| 3. కరుణశ్రీ జాతీయోద్యమ కవిత్వం - డా. గుమ్మనూరు ఉషారాణి                                                | 7  |
| 4. జాతీయోద్యమ జయపతాక - రాయప్రోలు కవిత - డా. కరణం శ్రీనివాసులురెడ్డి                                   | 10 |
| 5. భారత జాతీయోద్యమ సాధనలో తొలి తెలుగు సాహితీ కిరణం - చిలకమర్తి లక్ష్మీ నరసింహం, డా. పి. జయచంద్రుడు,   | 13 |
| 6. జంధ్యాల పాపయ్య శాస్త్రి “దేశభక్తి” - డా. కె. ఈశ్వరబాబు                                             | 16 |
| 7. జాతీయోద్యమంలో తెలుగు వారి పాత్ర - డా. ఎన్. భీమన్న                                                  | 19 |
| 8. ఆంధ్రా సాహిత్యంలో దేశభక్తి కవిత్వము - డా. వి. కృష్ణవేణి                                            | 21 |
| 9. నేనూ నా దేశం - విప్లవ పార్టీ గదర్ అవిర్భావం - డా. మన్యం నరసింహులు                                  | 24 |
| 10. స్వాతంత్ర్యోద్యమం తెలుగు కవులు - డా. పి. కుమార్ నీరజ                                              | 27 |
| 11. ఆంధ్రుల జాతీయోద్యమ కవిత్వం - డా. డి. యువశ్రీ                                                      | 31 |
| 12. రథచక్రాలు నవలలో చిత్రితమైన జాతీయోద్యమం - ఒక విశ్లేషణ - డా. ఎం. రాఘవరెడ్డి                         | 34 |
| 13. ధీశాలి, దేశభాంధవి - దువ్వూరి సుబ్బమ్మ - జి. మాధవీలత                                               | 38 |
| 14. దేశభక్తుడు, జాత్యాభిమాని జాషువా - ఐ. సజని                                                         | 41 |
| 15. జాతీయోద్యమ కవిత్వం - విహంగవీక్షణం - డా. యు. రమ్యజ్యోతి                                            | 44 |
| 16. జాతీయోద్యమ సాహిత్యం - కవులు - డా. దాల్లపూడి శివరామకృష్ణ                                           | 47 |
| 17. జాతీయోద్యమంలో తెలుగు కవి - డా. బి. శ్రీనివాసులు నాయక్                                             | 49 |
| 18. జాతీయోద్యమ స్ఫూర్తి కావ్యాలు - కవుల పాత్ర - కవాదపు లలిత                                           | 51 |
| 19. పుట్టపర్తి రచనల్లో జాతీయోద్యమ స్ఫూర్తి - డా. హరీష్ కుమార్ శ్రీధర                                  | 54 |
| 20. జాతీయోద్యమంలో తెలుగు కవుల కవిత్వం - ఒక అవలోకనం - ఎం. రాధాకుమారి                                   | 57 |
| 21. స్వాతంత్ర్య పోరాటంలో తెలుగు కవుల పాత్ర - ఒక సమీక్ష - డా. డి. సునీతాదేవి                           | 60 |
| 22. భారతదేశ స్వాతంత్ర్యోద్యమ సాహిత్యంలో కృష్ణశాస్త్రి కవిత్వం - ఆర్. విజయకుమారి                       | 63 |
| 23. జాతీయోద్యమంలో తెలుగు కవిత్వం పాత్ర - పి. కేశవులు                                                  | 66 |
| 24. స్వాతంత్ర్య ఉద్యమములో తెలుగు ప్రాభవపు ప్రభావము - డా. పి. రేవతి రెడ్డి, డా. సి. యన్. లత            | 69 |
| 25. జాతీయ ఉద్యమంలో తెలుగు కవిత్వం పాత్ర - డా. సీతా విజయులు రెడ్డి , డా. పి. వెంకటేశన్, డా. జి. గంగయ్య | 72 |

## స్వాతంత్ర్య పోరాటంలో తెలుగు కవుల పాత్ర - ఒక సమీక్ష

డా.డి.సునీతాదేవి, తెలుగు లెక్చరర్, ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల, పాడేరు - 531 036

స్వాతంత్ర్యం మనిషి జన్మహక్కు. ఆ హక్కును కబళించడానికి ఏవో కొన్నిశక్తులు ప్రయత్నం చేసినప్పుడల్లా ఏదో రూపంలో ప్రతిఘటన ఎదురౌతూనే వుంటుంది. సామ్రాజ్యవాద శక్తులు దురాశతో ఇతర జాతులను అణచిపెట్టి దేశాలను కబళించి అధికారం చెలాయిద్దామనుకోవటం కొంతకాలం కొనసాగవచ్చునేమో కాని ఎల్లకాలమూ సాగేదికాదని వివిధ దేశాల చరిత్రలే సాక్ష్యం చెబుతున్నాయి.

ఇంగ్లీషువారు వర్తకం నిమిత్తం మనదేశానికి వచ్చి మెల్లగా దేశాన్ని హస్తగతం చేసుకొని ఈస్టిండియా కంపెనీ రూపంలో పరిపాలన మొదలు పెట్టినప్పటినుంచీ భారతీయులు ఏదోవిధమైన ఆందోళనను వ్యక్తం చేస్తూనే వచ్చారు. 1857లో తలెత్తిన సిపాయీల విప్లవం ఆందోళనకు ప్రతిరూపమే. దానిని కేవలం సిపాయీల కలహంగా ఆంగ్ల చరిత్రకారులు చిత్రించినా, మనదేశాన్ని కొల్లగొట్టి ఆర్థిక పరిస్థితిని చిన్నాభిన్నం చేసిన దుష్టపరిపాలనకు వ్యతిరేకంగా వృత్తిపనులవారు, రైతాంగం మొదలైన వారు లేవదీసిన ఉద్యమం అది. వంగ, మహారాష్ట్ర ప్రాంతాలలో సైన్యంలో చేరిన సన్యాసులు ఆంగ్ల ప్రభుత్వంపై చేసిన తిరుగుబాటునే బంకించంద్ర చటర్జీ 'ఆనందమఠ్' నవలలో చిత్రించాడు. అందులోని 'వందేమాతరం' గీతం ఆనాడు సమస్త భారతదేశంలోనూ ప్రతిధ్వనించి ప్రజల్లో స్వాతంత్ర్య జ్వాలను దీప్తిమంతం చేసింది.

1885లో జాతీయ కాంగ్రెస్ ఏర్పడటంతో స్వాతంత్ర్య పోరాటానికి వేదిక రూపొందింది. ఎందరో దేశభక్తులు బయల్దేరి తమ ధన మాన ప్రాణాలను సైతం లెక్కచేయకుండా బానిసత్వ విముక్తికి పాటుపడ్డారు. ఈ పోరాటంలో తెలుగుదేశంలోని రచయితలు, కవులు కూడా ముందంజ వేసి దేశభక్తి పూరితమైన రచనలు వెలువరించి జాతిని జాగృతం చేశారు. 1897, 98 ప్రాంతంలోనే సరస్వతి, చింతామణి పత్రికల్లో దేశపరిస్థితిని చిత్రించే పద్యరచనలు ప్రచురితమైనాయి.

బ్రిటీష్వారి దమన నీతి ఫలితంగా బెంగాల్ విభజన జరగటంతో 1904-5 లో దేశమంతటా నిరసన వ్యక్తమైంది. అదే పద్ధతిలో మద్రాసు రాష్ట్రంనుండి గంజాం, విశాఖ జిల్లాలను వేరుచేయాలన్న ప్రయత్నాన్ని తెలుగు ప్రజలు 'వందేమాతరం - మందేరాజ్యం' నినాదంతో తీవ్రంగా ప్రతిఘటించి ఆ ప్రయత్నాన్ని విరమింపజేశారు. ఈ

కాలంలోనే ఒక అజ్ఞాత కవి 'ది క్రై ఆఫ్ మదర్ ఇండియా' పేరుతో కృష్ణాపత్రికలో (15-12-1905) ప్రబోధ గీతం వెలువరించాడు - అందులో కొన్ని పాదాలు ఇలా ఉన్నాయి:

“హిందువులారా ఎన్నాళ్లీగతి

మందమతులరై మాటికి జెడెదరా

నందనులగు మీరందరు స్రుక్కుగ

ఎందుకు నా బ్రతుకీతరుల కోసమ....”

“దూడనోరుగొట్టి ద్రోహంబు గొల్లలు

పాడి సమస్తము పరుల కమ్ముగతి

కూడులేని నా కొడుకుల గాదని

ఏడకో నాధనమెల్లను బోయెడి”

- అంటూ ఆనాడు తెల్లదారల దోపిడీని ఎండగ

ఒక వైపు సంప్రదాయబద్ధమైన పద్యకావ్యాలు, సా

రూపంలోనూ మరొకవైపు దేశీయమైన గీతాలు, సా

రూపంలోనూ తెలుగు కవులు దేశభక్తిని ప్రబోధించసా

చెన్నాప్రగడ భానుమూర్తి 'భారత ధర్మదర్శనము' (1905)

అత్తిలి సూర్యనారాయణ 'హిందూదేశ దారిద్ర్యము' (1906)

ముట్నూరి వెంకటసుబ్బారాయుడు, మంగపూడి వెంక

కలసి 'మాతృశతకము' (1908) వెలువరించారు.

వందేమాతరం గీతంలో మొదలై 20 దేశభక్తి కీర్తనలతో

'దేశీయకీర్తనలు' ఈ కాలంలోనే (1908) ప్రచురితమయ్యాయి.

తర్వాతికాలంలో అనేక అనుకరణలకు దారి చూపిన

క్రమంలోనే రాయప్రోలు సుబ్బారావు ఇలా అంటారు:

“మేలుకొనుమీ భరత పుత్రుడ

మేలుకొనుమీ సుజన మిత్రుడ

తెలుగు సరస్వతికి ముత్యాలసరం సమర్పించిన

అప్పారావు -

'దేశాభిమానము నాకుకద్దని వట్టిగొప్పలు చెప్పు

పూని ఏదైనా ఒకమేల్ కూర్చి జనులకు చూప

దేశమును ప్రేమించుమన్నా, మంచి

పెంచుమన్నా'

- అని ఉద్బోధించాడు.

కృషీవల కవితను వెలువరించి కవిక

పేరుగడించిన దువ్వూరి రామిరెడ్డి

“అంబుదంబుల అమృత పూరంబు లోలుకుగ

ఇంద్ర చాపంపు తోరణ మింపు గులుకగా”

వినువీధిలో బయల్దేరి వెడలిన స్వాతంత్ర్య రథాన్ని

ద్దర్శనం చేశాడు. ఆ రథం క్రింద మణిమయ  
లు, సింహాసనములు పడి నశించాయి. రథముపై  
ను మూర్తి ధర్మాకారమును ధరించిన శాంతి స్వరూపిణి  
త్ర్యదేవి. దానిని లాగుతున్నవారు ఎవరోకాదు ప్రజలే.  
ద భావములు లేక ప్రజలందరూ మాతృమందిరము  
వితల ద్వారా రామిరెడ్డి ఉద్బోధించాడు. ఇంకా వేదుల,  
ండల, జాషువా, కాటూరి, బలిజేపల్లి మున్నగు కవులు  
మాత వైభవాన్ని కీర్తించి ప్రజాహృదయాల్లో దేశభక్తి  
వెదజల్లారు.

కొందరు కవులు పౌరాణిక గాథలను ఆలంబనం  
ని స్వేచ్ఛా సమర సందేశాన్ని వ్యంగ్యంగా చాటారు.  
ములను కౌరవులుగా, ద్రౌపదిని భరతమాతగా, శ్రీకృష్ణుని  
విమోచకునిగా అభివర్ణించారు. కరుణశ్రీ జంధ్యాల  
వ్యూహాన్ని గాదు 'విజయశ్రీ' కావ్యంలో మహాభారత  
న్ని స్వాతంత్ర్య సంగ్రామంతో పోల్చారు -

“దేశకల్యాణ దివ్య సందేశ దీక్ష

నందుకొని స్వేచ్ఛ కొరకు విల్లందుకొనుడు

భరత సంతతి భావి సౌభాగ్యమునకు

సాగుగావుత స్వాతంత్ర్య సమర రథము”

అని శ్రీకృష్ణుడు పాండవులకు ఉద్బోధిస్తాడు.

మరికొందరు మహాకవులు చారిత్రక పురుషులను  
నాయకులుగా స్వీకరించి జాతీయతా భావవ్యాప్తికి  
దం చేశారు. రాజపుత్ర వీరుడైన రాణాప్రతాపుని  
ని గాంధీ మహాత్ముని స్వరాజ్య ఉద్యమంతో పోలుస్తూ  
ఖర శతావధానిగారు “రాణా ప్రతాపసింహ చరిత్ర”  
లో దాస్య విముక్తికి భారతీయులు పడిన ఇడుమలు,  
త్యాగాలు ధ్వనింపజేశారు.

ఈశ్వర పదభక్తి ఎపుడు మానగరాదు

మధుమాంస సేవన మరగరాదు

బంగారు పట్టు వల్లులు కట్టగా రాదు

కామాది శత్రువర్గము లంటరాదు స

త్యంబు శౌచము విడనాడరాదు

త్యాగంబు కలవైన తగ్గనీయంగరా

దాత్య నిగ్రహము పోనాడరాదు

మాన ముత్తమ ధనమౌట మరువరాదు

నిఖిల జగములు మారొడ్డి నిలుగాక

దేశభక్తిని విడనాడి తిరుగరాదు

భోగభాగ్యాలకు దూరమై నిద్రాహారాలు సైతం విడనాడి

ంత్ర దీక్షయే లక్ష్యంగా ఉద్యమించిన నాటి దేశభక్తుల

తిని హృద్యంగా చిత్రిస్తుంది ఈ పద్యం.

స్వేచ్ఛకోసం ధర్మపోరాటం సల్పిన మహారాష్ట్ర వీరుడు  
శివాజీ చరిత్రను ‘శివభారతం’గా తీర్చిదిద్దారు గడియారం  
వెంకటశేష శాస్త్రిగారు.

“చెదిరి పోయిన యంగముల్ కుదురుపరచి

పడలు వారిన తంతువుల్ చక్కదీర్చి

యనుగతిశ్రుతి భువన మోహనము గాగ

హాయి పలికింప లెమ్ము జాతీయవీణ”

అని దేశ సమైక్యతను ప్రబోధిస్తూ జాతిని జాగృతం  
చేశారు. పుట్టపర్తి నారాయణాచార్యుల ‘షాజీ’, ‘సిపాయి  
పితూరీ’, విశ్వనాథ సత్యనారాయణ ‘రూస్సీరాణి’, ‘శివార్పణం’  
మొదలైన కావ్యాలు స్వాతంత్ర్య సమరదీప్తిని జాజ్జ్వల్య చేస్తూ  
తెలుగునాట వెలుగులు విరజిమ్మాయి.

జానపద బాణీలో ఆలపించిన గరిమెళ్ళ గీతం ప్రజల  
నాలుకలపై నాట్యమాడి బ్రిటిష్ పాలకుల దురాగ్రహానికి గురి  
అయింది. విద్రోహకరమైన పాటలు విరచించిన నేరానికి  
రెండుమార్లు జైలుశిక్ష విధించింది నాటి ప్రభుత్వం.

రామరండు నాయకుడైన ఆంధ్రరత్న దుగ్గిరాల గోపాల  
కృష్ణయ్యగారు

“స్వరాజ్య మంత్రం ఒక్కటే మంత్రం - రాం భజన

మేలైన మంత్రం రాం భజన”

అంటూ రాం భజన కీర్తనలు వెలువరించారు.

శాంతి అహింసలు ఆయుధాలుగా దేశప్రజలందరినీ  
సమైక్యపరచి స్వరాజ్య సమరం సలిపిన మహానాయకుడు  
గాంధీమహాత్ముని కీర్తిస్తూ నాడు అసంఖ్యాకమైన గీతాలు  
వెలుపడ్డాయి. “కొల్లాయి గట్టితేనేమి మాగాంధీ” అంటూ  
బసవరాజు అప్పారావు

“వెన్నపూసా మనసు కన్నతల్లి ప్రేమ

పండంటి మోముపై బ్రహ్మ తేజస్సు”

అని భారతీయుల హృదయాల్లో ముద్రవేసుకున్న  
గాంధీరూపాన్ని వ్యక్తీకరించాడు. నిరుపేదల దీర్ఘస్వాసము  
వింజామరగా, పేదవారి కన్నీళ్ళు వెల్లగొడుగుగా, కారాగార  
వాసము కిరీటముగా ప్రజాహృదయం సింహాసనంపై  
ప్రతిష్ఠితుడైన గాంధీని కవి సుబ్రహ్మణ్య విశ్వనాథ సత్యనారాయణ  
అభివర్ణించాడు. తుమ్మల సీతారామమూర్తి ‘బాపూజీ ఆత్మకథ’,  
జాషువా ‘బాపూజీ’ జాతిపిత జీవితగాథను కమనీయ  
కావ్యరూపంలో చిత్రించాయి.

రాజశేఖర శతావధాని కూడా ‘రాణా ప్రతాపసింహ  
చరిత్ర’కు శేషకావ్యంగా ‘అమరసింహ చరిత్ర’ను రచించారు.  
ప్రతాపుని కుమారుడైన అమరసింహుడు అక్కరు పుత్రుడైన  
జహంగీర్ పై సల్పిన పోరాటం ఇందలి ఇతివృత్తం.

భరతమాతకు ప్రతీకగా రూపీరాణిని నాయకగా చేసి సిపాయీల విప్లవ గాథను 'భారత స్వాతంత్ర్య సంగ్రామము'గా చిత్రించిన ముదిగొండ వీరభద్రమూర్తిగారు అనంతరకాలంలో కొనసాగిన సమరాన్ని 'పందేమాతరం' అన్న కావ్య రూపంలో తీర్చిదిద్దారు. ఇది మహాభారతం వలె 18 ఖండాలుగా కొనసాగిన బృహత్కావ్యం. స్వాతంత్ర్య వీరుడు హంపన్న గాథను విద్వాన్ విశ్వం 'ఒకనాడు' కావ్యరూపంలో వెలువరించారు.

జాతీయ పునరుజ్జీవనోద్యమ ప్రభావంతో అవతరించిన నవ్యకవిత్వ వాహిని అనాటి దేశభక్తి, రాష్ట్రభక్తి కవితల రూపంలో రెండు పాయలుగా ప్రవహించి తెలుగు సాహితీ క్షేత్రాన్ని సస్యశ్యామలం చేసింది.

బెంగాల్, బీహార్ రాష్ట్రాలలో తలెత్తిన భాషోద్యమాలు, 1910లో గుంటూరు సభలో గైకొన్న ఆంధ్రరాష్ట్రానికి సంబంధించిన తీర్మానం, 1913లో బాపట్లలో ఏర్పాటయిన ప్రథమాంధ్ర మహాసభ మొదలైనవి ఆంధ్రోద్యమానికి ప్రేరణగా తోడ్పడ్డాయి. జాత్యభిమానం, దేశాభిమానం, భాషాభిమానం ముప్పేటలుగా పెనవేసుకొని ఈ ఉద్యమానికి ఊపిరిపోశాయి. ప్రాచీనాంధ్రులు సాధించిన విజయాలు, సముపార్జించిన

వైభవాలు ఆంధ్రప్రజల స్మృతి పథంలో మెదిలి వారిలో పౌరుషానలం వెలిగింప చేశాయి. పరిశోధకులు ఆంధ్రుల చరిత్రను త్రవ్వితలకెత్తసాగారు. దానిలోని ఉజ్జ్వలఘట్టాలను వస్తువులుగా గ్రహించి కవులు కవితలల్లసాగారు.

ఆంధ్రరాష్ట్రవతరణ సందర్భంలో పూర్వాంధ్ర వైభవాన్ని స్మరింపజేస్తూ ఆంధ్రప్రజల్లో పౌరుషోద్దీపనం కావిస్తూ వెలువడిన విశిష్ట చారిత్రక కావ్యం, మధునాపంతుల సత్యనారాయణ శాస్త్రిగారి 'ఆంధ్ర పురాణం'. ఆంధ్రుల చరిత్రను మలుపు తిప్పిన రసవద్ఘట్టాలు ఇందు వర్ణితమైనాయి.

“ఆంధ్రుల పూర్వగాథ లామ్నాయము చేసికొంటి,

పరమ ప్రియ ఘట్టములం బురాణముం జేయగ  
బూనుకొంటి”

అని వచించిన శాస్త్రిగారు వివిధయుగాలలోని ప్రధాన చారిత్రకాంశాలను రసానుకూలమైన కల్పనలు జోడించి రసరంజన కావించారు. ఆంధ్రుల వీరోచిత గాధలను సహృదయ హృదయైక వేద్యం కావించిన వీరరస ప్రధానకావ్యం ఆంధ్రపురాణం.

ఇలా ఎందరో కవులు జాతీయోద్యమ కాలంలో కవిత్వం రాసి ప్రజలను చైతన్యపరిచారు.

#### ఉపయుక్త గ్రంథాలు

1. ఆంధ్రపురాణం - మధునాపంతుల సత్యనారాయణశాస్త్రి
2. అమరసింహచరిత్ర - రాజశేఖర శతావధాని
3. శివభారతము - గడియారం వేంకటశేషశాస్త్రి
4. రూపీరాణి - విశ్వనాథ సత్యనారాయణ
5. విజయశ్రీ - జంధ్యాల పాపయ్యశాస్త్రి
6. భారతస్వాతంత్ర్య సంగ్రామం - ముదిగొండ వీరభద్రమూర్తి



This book deals with the studies on biodiversity, biochemistry and microbiology of bycatch at fishing harbours to know the nutritional values and the quality. The study has been dealt focusing on major aspects such as biodiversity, organic composition, mineral composition and microbiology. This book is more relevant to scholars, researchers, academicians and the fisheries department.



**Dr. T. Sasikala** is presently working as a Zoology Lecturer in Govt. Degree College for Women, Marripalem, Visakhapatnam. She has PG degrees in M.Sc Industrial fisheries, M.Sc Zoology, M.A. English and B.Ed degrees from Andhra University, Visakhapatnam. She further enriched her knowledge by obtaining Ph.D in "Studies on biodiversity, biochemistry and microbiology of bycatch at Visakhapatnam fishing Harbour" (2019) from Andhra University, Visakhapatnam. She had published 6 research papers in various international journals and also participated conferences, workshops, seminars and other training programs at the national level. A humanist, she is associated with many affirmative social acts and groups to service of the society.



**UDAY PUBLISHING HOUSE**

4648/21, Ansari Road, Darya Ganj,  
New Delhi – 110 002

Email: [udaypublishinghouse@gmail.com](mailto:udaypublishinghouse@gmail.com)

Mob: 9246669543

₹ 1050/-



**Bycatch for  
Human Consumption**  
 Study of Biodiversity, Biochemistry  
 and Microbiology  
**Dr. T. Sasikala**



# Bycatch for Human Consumption

Study of Biodiversity, Biochemistry  
and Microbiology



**Dr. T. Sasikala**



Scanned with OKEN Scanner